घटती हरियाली- बढ़ता पारा : कितना बदल गया शहर हमारा

भीषण गर्मी झेल रहे झीलों के शहर उदयपुर से एक रिपोर्ट

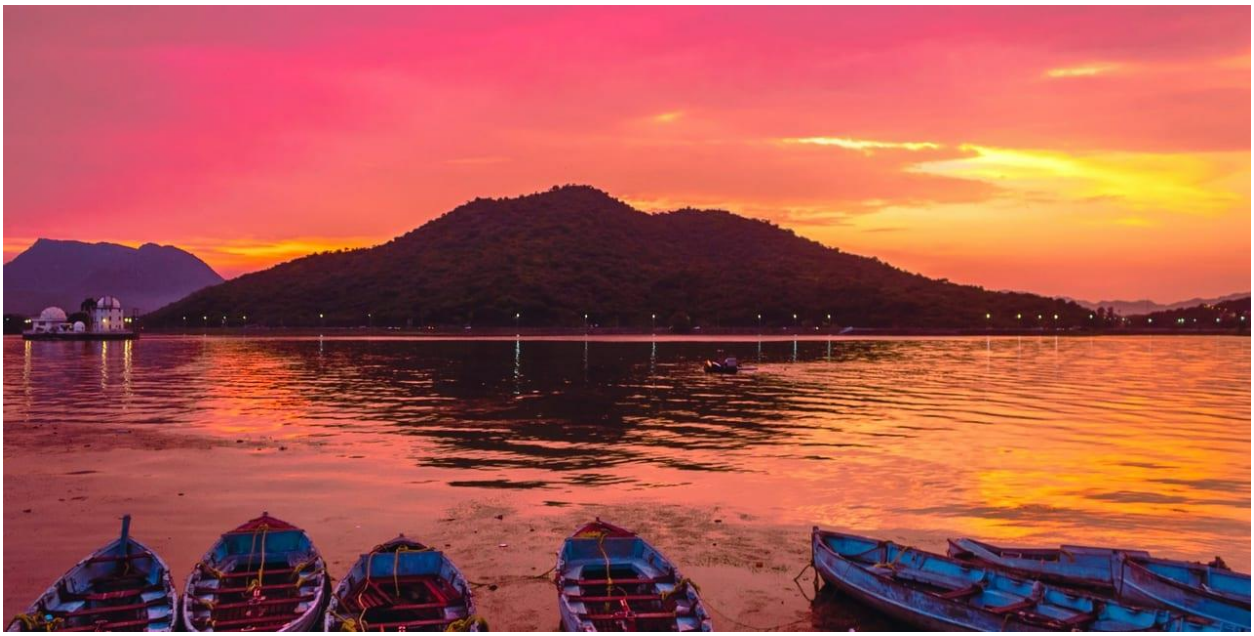

फोटो - यश शर्मा, उदयपुर

मई का महिना लगते ही उदयपुर में तीन किस्से बड़े आम हैं:

- बुज़ुर्ग कहते हैं कि हमारे वक़्त में इतनी तेज़ गर्मी नहीं पड़ती थी। उदयपुर को कभी कूलर- पंखों की ज़रूरत नहीं पड़ती थी; और अब १० मिनट बिना कूलर नहीं रह सकते !! अखबार मुनादी कर देते हैं कि इस बार की गर्मी २० साल का रिकॉर्ड तोड़ देगी- ५० साल का रिकॉर्ड तोड़ देगी !! गलियों से गुजरते वक़्त हाँफते एयर कंडिशनरों की घरघराती आवाजें सुनाई देती है।
- अचानक उदयपुर शहर की सड़कों से पर्यटक गायब होने लगते हैं। जो कुछ बचे हुए हैं- वो कहते हैं- इस शहर में पहले इतनी गर्मी नहीं पड़ती थी, मैं यहाँ कई बार आ चुका हूँ !!
- सुबह झीलों में तैराकों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। पूरे दिन सूने किनारों वाली झीलें शाम ढलने के बाद आबाद होती हैं। झील किनारे जुटने वाली भीड़ अब देर रात तक वहीँ बैठी रहती है- घर जाने का नाम नहीं लेती !!

उदयपुर शहर इन दिनों तप रहा है। आम तौर पर पूरे राजस्थान में पड़ने वाली तेज़ गर्मी से उदयपुर अछूता रहा करता था और शेष राजस्थान के औसत तापमान से यहाँ का तापमान ५-७ डिग्री कम ही रहा करता था। पर अब हालात बदल रहे हैं। पूरे दिन झील के किनारे तक आग उगलते हैं, सड़कें- बाज़ार सूने रहते हैं।

क्या अकेले ग्लोबल वार्मिंग को दोष दिया जाए ?

शायद नहीं !! शहरों के बढ़ते तापमान का एक कारण ग्लोबल वर्मिंग हो सकता है; किन्तु यह अकेला कारण नहीं है। अगर थोड़ा बारीकी से देखा- समझा जाए तो उदयपुर के बढ़ते तापमान का एक कारण यहाँ की ज़मीन- पहाड़ियों का बदलता स्वरुप भी है। शहर की ज़मीनों का उपयोग बदल रहा है। शहर लगातार विस्तार करता जा रहा है। खेत और उनकी मेड़ों पर लगे पेड़ लगातार गायब होते जा रहे हैं और वहां निरंतर ऊँची इमारतें बन रही हैं । कोई इंसान अगर शहर के शोभागपुरा- बेदला क्षेत्र में १५-२० साल बाद आया हो तो वो इस जगह को पहचानने से इनकार कर दे ! पटेलों के बड़े बड़े खेत और नीम- आम के पेड़ों की पंक्तियाँ अब किस्सों में गुम हैं और वहां गगनचुम्बी अपार्टमेंट दिखाई देते हैं। पेड़ों को हटाकर बनी लम्बी- ऊँची इमारतें हवा के प्राकृतिक बहाव को बदल रही है, नतीजन गर्मी बढ़ती जा रही है।

सड़कों की लम्बाई बढ़ रही है और सड़क के किनारे तक सीमेंटेड लॉकिंग टाइल से बन रहे हैं। डामर-सीमेंट से बनी सड़कें और कंक्रीट से बनी इमारतें गर्मी को अवशोषित करके दोपहर और शाम में तेज़ ऊष्मा छोड़ती है, जिस से उदयपुर जैसे नये बस रहे शहरों का तापमान बढ़ जाता है। ऐसे में इन्हें "अर्बन हीट आईलेंड" या "हीट आईलेंड" कहा जाने लगा है।

महाराणाओं ने बगीचे लगाये, हमने उजाड़ दिए

उदयपुर शहर को अरावली की पहाड़ियों से घिरी एक घाटी, जिसे "गिर्वा" कहा जाता है; में तकरीबन पौने पांच सौ साल पहले बसाया गया। यहाँ के शासक महाराणाओं ने शहर की बसावट में अगर किसी चीज़ का सबसे ख़ास ख्याल रखा तो वे था- मोहल्लों के आस-पास हरियाली, बड़े-बड़े बगीचे और बावड़ियाँ। इन बगीचों में स्थानीय आम, जामुन, शहतूत, अमरुद, बरगद आदि के पेड़ सबसे ज्यादा थे। ये बगीचे- बावड़ियाँ जहाँ आने-जाने वाले मुसाफिरों को छाया, फल और पीने का पानी उपलब्ध करवाते थे, वहीँ शहर के तापमान को बढ़ने नहीं देते थे।

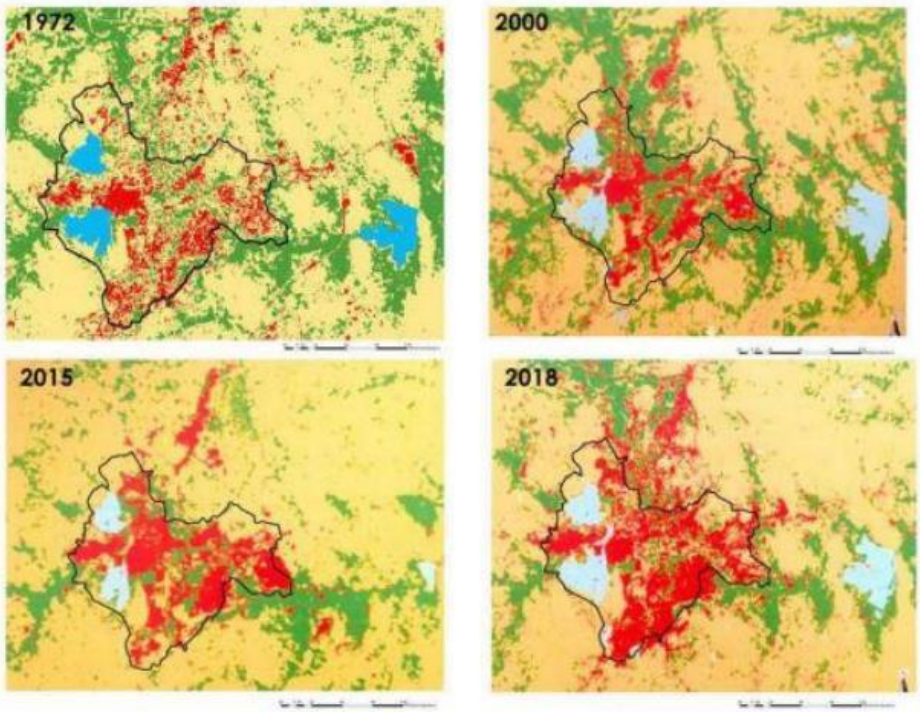

फोटो- उदयपुर लैंडयूज एवं लैंड कवर चेंज, शहरी ढांचागत प्लान २०१९ , सेप्ट अहमदाबाद

राजशाही चली गयी और जब शहर का विस्तार होने लगा तो सबसे पहले कुल्हाड़ी इन्ही बगीचों पर चली। जो संरक्षित हो सकते थे, वे बगीचे बच गए और शेष रहे बगीचों में नए घर उठ खड़े हुए। हरियाली घटने लगी। बावड़ियाँ गायब होने लगी। सेंटर फॉर इन्वायरमेंट प्लानिंग एवं टेक्नोलोजी, अहमदाबाद की "लैंड यूज़ एवं लैंड कवर चेंज, शहरी ढांचागत प्लान रिपोर्ट-२०१९" *(देखें चित्र में)*

के अनुसार साल १९७२ से अब तक में उदयपुर शहर की हरियाली बहुत तेज़ी से कम हुई है। शहर के लिए फेफड़ों का काम करने वाले ये बगीचे गायब हो गए। गुलाब बाग, सहेलियों की बाड़ी, समोर बाग, महाराणा भूपाल अस्पताल और रेलवे प्रशिक्षण भवन जैसे कुछ ही इलाके बचे हैं, जहाँ अभी भी घने पेड़ मौजूद हैं। आयड नदी के दोनों किनारे, सुन्दरबाई की बावड़ी, तोरण बावड़ी, धूलकोट, देवाली, नेला तालाब, रूप सागर आदि बगीचे अब बस पुराने लोगों के किस्सों- कहानियों में ही जिंदा हैं।

अरावली अब होटलों से रोशन है

उदयपुर के लिए कहा जाता है कि किसी भी घर की छत पर खड़े हो जाओ; अरावली की पहाड़ियां शहर को घेरे नज़र आती हैं। पहाड़ियां तो अब भी दिख जाती हैं, पर अब इन पहाड़ियों पर चमकती रंग- बिरंगी लाइटें भी नज़र आती हैं। शहर की सबसे करीबी पहाड़ियों को पिछले १० सालों में बड़ी- छोटी होटलों ने छलनी कर दिया है। बूझडा- अलसीगढ़ में तो पिछले एक दशक में १०० से ज्यादा होटलें- रिसोर्ट खुल गए हैं। इनमें एक दर्जन से ज्यादा नामी होटल आई हैं। अधिकांश ने पहाड़ियों को अपने कब्ज़े में लिया। चीरवा, देबारी की पहाड़ियां भी इस से अछूती नहीं।

साइकिल को मोटर-साइकिल खा गयी

जिस शहर के एक कोने से दूसरे कोने को साइकिल से आधे घंटे में नापा जा सकता है, वहां अब साइकिलें गिनी चुनी ही बची हैं । हालाँकि कोरोना काल के बाद साइकिलों की बिक्री बढ़ी है, किन्तु अधिकांश साइकिलें आवागमन के लिए प्रयोग न होकर केवल वर्जिश और फतहसागर के चारों ओर चक्कर लगाने तक सीमित रह गयी हैं।

उदयपुर में सबसे बड़ी चुनौती है परिवहन तंत्र की। हालाँकि पिछले साल आरम्भ की गयी उदयपुर सिटी बसों ने हालातों को कुछ हद तक ज़रूर सुधारा है, किन्तु अब भी लोग निजी वाहनों से आना-जाना ही पसंद कर रहे हैं। जैसे जैसे लोगों की आमदनी बढ़ी, शहर में साइकिलों का स्थान मोटरसाइकिलों ने ले लिया। चार-पहिया वाहनों की दीवानगी भी कुछ कम नहीं ! साल २०१६-१७ की तुलना में २०२० तक शहर सड़कों पर ३५% वाहन ज्यादा हो चुके हैं, जबकि स्क्रेप हुए वाहनों के प्रतिशत ने दहाई की संख्या भी पार नहीं की। पिछले कुछ समय से शहर में इलेक्ट्रिक स्कूटर और कारें दिखाई देने लगी हैं, जो ज़रूर सुकून देती हैं।

और हमारी आदतें भी बदल गयी

गर्मी आते ही लू लगने के मामले अचानक से बढ़ जाते हैं। महाराणा भूपाल अस्पताल के फिजिशियन डॉ. पुलकित के अनुसार हीट स्ट्रोक के मामले पिछले कुछ सालों में लगभग दुगुने हो गए हैं। इनमें बच्चों के उल्टी-दस्त के मामले भी शामिल हैं। वे इसे सीधे-सीधे हमारी आदतों में हुए बदलाव से जोड़ते हैं। शहर में बढ़ रहे एसी के उपयोग और एसी से सीधे तेज़ मौसम में बाहर आने से तबियत बिगड़ना बहुत आम हो चला है।

मेवाड़ में कहावत है कि *"जेठ ने धाप्यो कंठ- मगज सुहावे"* अर्थात जेठ *(हिन्दू पंचांग का एक महिना/ मई-जून)* को ढका हुआ सिर और पानी से तर कंठ अच्छा लगता है। मायने ये हैं कि बाहर निकलो तो खूब पानी पीकर और सिर ढक कर निकलो। मौसम के अनुसार भोजन शैली को भी बदलना ज़रूरी है। तेज़ गर्मी से बचने के लिए देशी नुस्खों को भूलना घातक हो सकता है।

भाया, चेत सके तो चेत

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार अगर तापमान १.५ डिग्री भी ज्यादा बढ़ता है, तो इस से सबसे अधिक प्रभावित कमज़ोर तबके के लोग होते हैं। उनके स्वास्थ्य, भोजन, महंगाई, आजीविका के साधन आदि सब प्रभावित होते हैं। तापमान में बदलाव के कई कारण है। अफगानिस्तान से जैसलमेर के रास्ते आने वाली गर्म हवाओं को रोकना तो हमारे हाथ में नहीं हैं, पर हम कुछ प्रयासों से शहर के तापमान को अब और अधिक बढ़ने से रोकने की कोशिश ज़रूर कर सकते हैं:

- शहर के भीतर हरित क्षेत्रों को बढ़ाया जाए। कम जगह पर अधिक घने शहरी जंगल विकसित किये जा सकते हैं।
- सड़कों के दोनों तरफ ग्रीन बेल्ट, फुटपाथ और साइकिल ट्रेक विकसित किये जाएँ।
- नए बन रहे आवासीय क्षेत्रों में हरित क्षेत्रों का दायरा तय किया जाए। शहरी विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने इसके लिए बाकायदा गाइडलाइन (URDPFI गाइडलाइन) जारी की हुई है।
- नए बन रहे भवनों- शहरी क्षेत्र को पर्यावरण-मित्र (इको-फ्रेंडली) और संस्थायी (सस्टेनेबल) बनाने पर फोकस किया जाए।
- भवनों की डिजाइन इस प्रकार से रखी जाए कि वे कम से कम ऊष्मा फैलाए। भवन के बाहरी हिस्सों में ग्लास का काम न्यून रखा जाये। निर्माण सम्बन्धी नियमावली और गाइडलाइन का पालन करें।
- घरों में खिड़की- दरवाज़े इस प्रकार बनाये जाए कि हवा का प्रवाह बना रहे।
- निजी वाहनों की जगह सार्वजनिक वाहनों का इस्तेमाल करें। क्योंकि सड़क पर जितनी कम गाड़ियाँ रहेंगी, उतना कम प्रदूषण होगा। अपने बच्चों को निजी वाहन में स्कूल छोड़ने की बजाय स्कूल बस में जाने के लिए प्रोत्साहित करें।
- शहरी निकाय पब्लिक ट्रांसपोर्ट के क्लीन फ्यूल माध्यमों को बढावा दिया जाए तथा उनके उपयोग के लिए समुदाय को जागरूक किया जाए।
- नॉन- मोटराइज्ड व्हीकल को बढ़ावा दें। साइकिल को बढ़ावा दें और पैदल चलें। यह आपके और पर्यावरण दोनों के लिए मुफीद है।
- संरक्षित क्षेत्र, पहाड़ों पर निर्माण रोका जाए।
- शहर में कार्बन उत्सर्जन को कम करने के सार्थक प्रयास हो।
- घर से बाहर निकलने से पहले गर्मी और लू से बचाव के सभी देसी नुस्खे अपनाएं। खान-पान का ख्याल रखें।

नगर निगम उदयपुर इन समस्याओं को एक बड़ी चुनौती के रूप में देखते हुए इसके समाधान की दिशा में काफी कार्य कर रहा है। शहर के ग्रीन कवर को बढाने के लिए इकली साउथ एशिया के साथ मिलकर नगर निगम शहर में अर्बन फारेस्ट विकसित करने की दिशा में भी आगे बढ़ चुकी है। चेतक चौराहे स्थित मोहता पार्क में मियावाकी तकनीक से अर्बन फारेस्ट तैयार किया जा रहा है, जबकि एक और स्थान पर इसका विकास किया जाना प्रस्तावित है। भविष्य में इसे शहर के सभी २०० पार्कों में बढाए जाने की योजना है। बर्नार्ड वेन लीयर फाउंडेशन के साझे में संचालित अर्बन95 परियोजना में भी शहर को बच्चों के लिए सुरक्षित, सहज, सुलभ बनाने में "हरित क्षेत्र" विकास पर ख़ासा जोर है।

ओम प्रकाश,

(अर्बन95, उदयपुर)